शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 मई 2014

निर्गुणमार्गी संतों द्वारा वर्णित शब्द-साधना का गवेषणात्मक अध्ययन

देवेन्द्र कुमार शर्मा
प्रवक्ता हिन्दी, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, कलहोग,
हिमाचल प्रदेश, भारत,

शोध संक्षेप

संतमत के मूल दार्शनिक सिद्धान्तों का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि निर्गुणमार्गी संतों की बानियों में वर्णित शब्द या नाम एक ऐसी सृजनात्मक शक्ति या परमतत्त्व की ओर संकेत करता है जो वार्णिक नहीं है, बल्कि संपूर्ण सृष्टि की चेतना का आधार है। सभी संतों की बानियां एकस्वर में कहती हैं कि इस शब्द का प्रत्यक्ष अनुभव शरीर में स्थित भ्रूमध्य में ध्यान को एकाग्र करके प्राप्त किया जा सकता है। विश्व के विभिन्न भागों में हुये अनेकानेक संत-महात्माओं का साहित्य यह तथ्य भी उद्घाटित करता है कि एक सर्वमान्य वैज्ञानिक सिद्धान्त की तरह शब्द की वैश्विक मान्यता है।

मुख्य शब्द:
संतमत, शब्द साधना, संत, निर्गुणमार्ग, नाममार्ग

प्रस्तावना

हमारे समाज में प्रायः किसी भी सदाचारी व्यक्ति को संत कह दिया जाता है। लेकिन हिन्दी साहित्य में 'संत' शब्द भक्तिकाल की एक विशिष्ट काव्य परंपरा का द्योतक है। जिसे ज्ञानाश्रयी शाखा भी कहा जाता है। इस परंपरा के अंतर्गत उन भक्त कवियों को सम्मिलित किया जाता है जिन्होंने एक सर्वमान्य सिद्धांत या विशिष्ट विचारधारा को किसी न किसी रूप में अपनाया है। यह विचारधारा ही संतमत का आधार है। संतमत के भव्य प्रासाद की नींव में स्थित इस दार्शनिक सिद्धांत का अध्ययन वैसे तो हमेशा से गवेषणा का विषय रहा है, परंतु आज जबकि हर ओर स्वयं को संत घोषित करके अनेकाअनेक व्यक्ति अपनी स्वार्थ साधना हेतु स्वयंकल्पित मतों का प्रचार करने में संलग्न हैं, तो संतमत के साधनात्मक पक्ष का विवेचन करना एक बार फिर से न केवल प्रासंगिक हो गया है बल्कि यह वर्तमान काल की सामयिक आवश्यकता भी है।

सूत्र रूप में संतमत के मूल में विद्यमान सर्वमान्य विचारधारा की ओर संकेत करते हुए श्यामसुंदर दास ने कहा है कि संतों ने नाम, शब्द, सदगुरु आदि की महिमा गाई है और मूर्तिपूजा, अवतारवाद और कर्मकांड का विरोध किया है तथा जाति-पांति का भेदभाव मिटाने का प्रयत्न किया है।

इस प्रकार यह मूल सूत्र एक ओर जहां नाम या शब्द की महिमा से संबंधित है, वहीं दूसरी ओर इसमें सामाजिक सुधार और मानवता की भावना भी निहित है।

निर्गुणमार्गी संतों की शब्द-साधना

कबीर तथा अन्य संतों की इस साधना के संदर्भ में डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी का मत है कि इनकी

दृष्टि इहलोक तक नही, उसके मूल तक जाती है। उसे पाने की बेचैनी है, वही उसका स्वभाव है, उसी से वह विलग हो गया है या भूल गया है, उसे ही वह पाना चाहता है। इसका नाम वह देता है 'सबद'। यह शरीरी शब्द ही अशरीरी मूल शब्द तक पहुंचने का साधन है।

स्पष्टतः संतों की साधना, शब्द के साकार रूप सतगुरु की भक्ति से आरंभ होकर निराकार परमात्मा अर्थात् अशरीरी शब्द तक जाती है। इतना ही नहीं कबीर ने जिसे सहज योग कहा है उसके लिए भी शब्द की खोज एक अनिवार्य शर्त है। इस शब्द के बिना केवल भौतिक साधनाओं से मन को वश करना संभव नहीं हैः

सबद खोजि मन बस करै, सहज जोग है येहि।
सत्त सबद निज सार है, यह तो झूठी देहि।।

'शब्दकोश संतमत बानी' में 'शब्द' का अर्थ दिया गया है- आदि धार, प्रथम प्रकाश या जहूर, चैतन्य की रवाँ धार के साथ जो आवाज पैदा हुई। 'ए ट्रेजरी ऑफ मिस्टिक टर्म्स' के अनुसार शब्द या सबद संतों के अनुसार परमात्मा का शब्द, दिव्य ध्वनि के रूप में रचनात्मक शब्द, ध्वनि तरंग, लोकातीत संगीत, रचनात्मक शक्ति, संपूर्ण सृष्टि का स्रोत है। यह परमात्मा की सक्रिय और रचनात्मक शक्ति है। यह परमात्मा का वह आदि स्पंदन है जो सृष्टि को प्रक्षेपित करता है तथा इसका अस्तित्व बनाए रखता है। जब मन और आत्मा को अंतर में केंद्रित और जाग्रत किया जाता है तो उनमें इस आदि स्पंदन को सुनने की क्षमता आ जाती है। यह दिव्य ध्वनि है, सच्चा ब्रह्मांडीय संगीत है। हमारी आंतरिक शक्तियां इस दिव्य शक्ति को प्रकाश के रूप में भी देखती हैं।

डॉ.पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल ने लिखा है कि शब्द - गुरु की शिक्षा, सिचाण, पतीला, कूंची, वांण, मस्क, निर्भय-वांणी, अनहद वाणी, शब्दब्रह्म, परमात्मा के रूप में प्रयुक्त हुआ है ।

उपर्युक्त मत शब्द की दो प्रमुख विशेषताओं की ओर संकेत करते हैं- पहला यह कि इस शब्द रूपी सृजनात्मक शक्ति में अनहद नाद या धुन है और दूसरा यह कि उसमें प्रकाश भी है।

इसीलिये अनहद नाद भी शब्द का ही पयार्यवाची सिद्ध होता है। उर्वशी सूरती भी नाद का अर्थ शब्द करती है। 'ए ट्रेजरी ऑफ मिस्टिक टर्म्स' के अनुसार इस शब्द की दिव्य ध्वनि तब तक गूँजती रहती है जब तक सृष्टि रहती है । इसीलिए इसे अखंडित कहा जाता है। अखंडित होने से आशय है कि यह दिव्य संगीत अनन्त काल तक निरंतर बजता रहता है। आचार्य परशुराम चतुर्वेदी भी इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि संतों ने सुरति को किसी सदगुरु की बतलाई युक्तियों द्वारा उस अनाहत नाद वा अनहद शब्द के साथ जोड़ देना परमावश्यक बताया है, जो हमारे भीतर अपने आप उठा करता है और जो हरि की कथा अथवा भगवत्संकेत के रूप में इसे निरंतर संकेत भी किया करता है।

डॉ. पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल का यह भी मत है कि निर्गुणियों को इस बात में विश्वास है कि 'सबद' अथवा सूक्ष्म एवं सक्रिय शब्द प्रत्येक व्यक्ति के अंतर्गत ध्वनित होता रहता है। उस सूक्ष्म शब्द के गुंजन ही सभी वर्तमान पदार्थों के मूल कारण हैं और उन्हीं के द्वारा सृष्टि का व्यापार निरंतर चलता रहता है। आधुनिक वैज्ञानिक भी अब इस बात को समझने लगे हैं कि यह कंपन किस प्रकार सभी सृष्टिक्रम की जड़ में काम करते हैं। सूक्ष्म दशा में भी ये कंपन

शब्दों के रूप में ध्वनि करते हैं, रंगों के रूप में प्रकट हुआ करते हैं और भिन्न-भिन्न आकृतियां ग्रहण करते हैं। इन शब्दों को सुनने, इन रंगीन प्रकाशों को देखने तथा इन आकृतियों को प्रत्यक्ष करने के लिए हमें चाहिए कि बाह्य पदार्थों की ओर से अपनी मानसिक वृत्तियों को हटाकर अपने को भीतर के लिए भी और सचेतन बना लें ।

अनेक आधुनिक विद्वानों ने भी इस तथ्य की पुष्टि की है कि शब्द की चेतन धारा से ही स्थूल सृष्टि अस्तित्व में आई है । डॉ. रैण्डोल्फ स्टोन के अनुसार "स्थूल पदार्थ चेतन धनात्मकता का विशेष बिन्दु पर जमा हुआ रूप है। जहां यह चेतन धुनात्मकता ठोस, द्रव, गैस या पदार्थों के रूप में प्रकट होती है।"

डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी के अनुसार 'शब्द' सृष्टि का मूल और वाणी तथा मन से परे है। संत का राग उस शब्द पर है जो व्यक्त जगत का मूल है।

डॉ.रामकुमार वर्मा के अनुसार योगी जब समाधिस्थ होता है तो उसके शून्य अथवा आकाश (ब्रह्मरंध्र के समीप के वातावरण) में एक प्रकार का संगीत होता है जिससे वह मस्त होकर ईश्वर की ओर ध्यान लगाए रहता है। इस शब्द का शुद्ध रूप अनाहत है। यह ब्रह्मरंध्र में निरंतर होता रहता है।

उर्वशी सूरती ने लिखा है कि संतमत की साधना में ध्वनि अथवा शब्द कालांतर में स्वतः और सहज हो जाता है। साधक स्वयं शब्दमय हो जाता है और शब्द ही ब्रह्म है, अतः वह ब्रह्ममय हो जाता है। जब श्रोता, शब्द और नाद-श्रवण के त्रैत का निवारण हो जाता है, या श्रोता-श्रव्य का द्वैत नहीं रहता, तब मात्र अद्वैत का बोध होता है।

शब्द ब्रह्म का शाब्दिक अर्थ भी ओ३म होता है। यही ओ३म आगे चलकर सिख मत के बीजमंत्र का आधार बना। गुरु नानक ने इसे एकोंकार कहा। इस प्रकार मधुमालती से लेकर दादू दयाल तक जिस एकंकार या एकोंकार का वर्णन पाया जाता है वह और कुछ नहीं यही शब्द रूपी आंतरिक ध्वनि है, जो सृष्टि को जीवन प्रदान कर रही है। एक ऐसी शक्ति जो सृष्टि सृजन का कारण है।

गोरखनाथ ने शब्द के विषय में कहा हैः

वेद कतेब न खांणी बाणीं।
सब ढंकी तलि आंणी ।।
गगनि सिशर महि सबद प्रकास्या।
तहं बूझै अलष बिनांणीं ।।

{परमात्मा का वर्णन वेद, कतेब, चारों खानियों का कोई जीव और वाणी- इनमें से कोई नहीं कर पाया है। इन सबने तो केवल उस पर पर्दा ही डाला है। उस अलख की समझ तो तब आती है जब अंतर में गगन के शिखर पर शब्द प्रकाशित होता है।}

संत कबीर ने इसी शब्द की ओर संकेत करते हुए कहा हैः

गगन मँडल के बीच में, जहाँ सोहंग डोरि ।
सबद अनाहद होत है, सुरति लगी तहँ मोरि।।

प्रायः सभी संतों ने नाम या शब्द का एकस्वर में गुणगान किया है। वास्तव में सभी संतों का उपदेश मूलतः एक ही है। भेद-दृष्टि तो अपूर्णता की द्योतक होती है। संत कबीर के अनुसार जब कोई व्यक्ति शब्द साधना द्वारा प्रभु से अभेद हो जाता है तो वह बाहरी तौर पर जिस भी धर्म को क्यों न मानता हो, उसका आंतरिक अनुभव सभी पहुंचे हुए संतों के समान एक जैसा ही होता हैः

हिलि मिलि खेलौं सबद से, अंतर रही न रेख।

समझे का मति एक है,क्या पंडित क्या सेख।।

उनके अनुसार शब्द के बिना परमात्मा से मिलाप संभव नहीं है, अतः साधक को शब्द की परख करनी चाहिए:

सबद हमारा हम सबद के, सबद ब्रह्म का कूप।
जो चाहै दीदार को, परख सबद का रूप।।

इसी प्रकार के विचार दादू दयाल भी अपनी बानी में व्यक्त करते हुए कहते हैं कि यह सृष्टि शब्द के आधार पर ही अवस्थित हैः

दादू सबदैं बंध्या सब रहै,सबदैं ही सब जाइ।
सबदैं ही सब ऊपजे, सबदैं सबै समाइ ।।

आपके कहने का भाव है कि शब्द वार्णिक न होकर सृष्टि की उत्पत्ति, पालन और संहार करने वाली शक्ति का नाम है।

जब वह परमात्मा अपनी शब्द रूपी शक्ति को प्रकट करता है तो सृष्टि की उत्पत्ति हो जाती है। जब वह शब्द को अपने आप में वापस समेट लेता है तो सृष्टि का अस्तित्व समाप्त हो जाता है। यह शब्द रूपी शक्ति ही सृष्टि के सम्पूर्ण विस्तार तथा स्वयं मनुष्य शरीर के भीतर भी विद्यमान है। प्रायः सभी संतों की बानियों में शब्द और नाम को एक दूसरे के पर्यायवाची के रूप में प्रयुक्त किया गया है। उनके अनुसार शब्द या नाम वह शक्तिधारा है जो सीधे परमात्मा से आ रही है । शब्द की यह धारा प्रत्येक मनुष्य के अन्तर में विद्यमान है तथा वार्णिक नाम के सुमिरन द्वारा नाद और प्रकाश के रूप में प्रकट होती है। इसी शब्द की साधना के द्वारा ही संतों ने परमतत्व से साक्षात्कार करने में सफलता प्राप्त की थी।

संत नामदेव का कथन है-

गगन मंडल मैं रहनि हमारी
सहज सुंनि ग्रिह मेला ।।
अंतरधुनि मैं मन बिलमाऊं
कोई जोगी गंमि लहैला ।।
पाती तोडि न पूजौं देवा
देवलि देव न होई ।।
नांमां कहै मैं हरि की सरना
पुनरपि जनम न होई ।।

अर्थात् शब्द रूपी वीणा परमात्मा के धाम से बज रही है । यदि हम अपने ध्यान को बाहरी शरीर से ऊपर उठा लें तो हमें अपने अंतर में ही शब्द के माध्यम से मुक्ति की प्राप्ति हो सकती है। शब्द की इस साधना को अपनाने पर किसी प्रकार की दूसरी साधना की आवश्यकता नहीं रहती। कबीर के अनुसार यह शब्द हमारे शरीर में विद्यमान हैः

कबीर सबद सरीर में बिन गुन बाजै ताँत ।
बाहर भीतर रमि रहा, ता तें छूटी भ्रांति ।।

अर्थात् बिना किसी तार की सहायता से अन्तर में बजने वाला यह शब्द सर्वत्र विद्यमान है तथा इसी से जीव के संशयों का नाश संभव है ।

गुरु नानक ने भी कहा है कि हमारा शरीर परमात्मा का ऐसा अदभुत महल है जिसमें निरंतर शब्द रूपी संगीत गूंज रहा है-

घर महि घरु देखाइ देइ
सो सतगुरु पुरखु सुजाणु ।।
पंच सबद धुनिकार धुनि
तह बाजै सबदु नीसाणु ।।

यह वर्णन दर्शाता है कि शब्द के माध्यम से साधक अपने अंतर में परमात्मा तक पहुंच सकता है।

दादू दयाल ने भी अपनी बानी में शब्द का विशद वर्णन किया है-

सवदि समांनां जे रहे, गुरु वाइक वीधा।
उनही लागा एक सौ, सोई जन सीधा ।।

अर्थात् जो व्यक्ति गुरु के वचनों पर आचरण करके आंतरिक शब्द में लीन हो जाता है, वह एक ईश्वर से मिल जाता है। शब्द को पकड़कर ही परमात्मा से मिला जा सकता है।

रविदास भी अन्य संतों के समान शब्द और नाम को समान अर्थों में प्रयुक्त करते हैं-

सुरत शब्द जउ एक हों,
तउ पाइहिं परम अनंद ।
रविदास अंतर दीपक जरई,
घट उपजई ब्रह्म अनंद ।।

अर्थात् यदि हमारी आत्मा अन्तर में शब्द के साथ एकाकार हो जाए तो हमें ब्रह्मानंद का अनुभव हो सकता है।

संत चरनदास के अनुसार अनहद शब्द बाहरी तौर पर देखने पर बहुत दूर होते हुए भी संपूर्ण शरीर में व्याप्त है। वह वर्णात्मक नहीं है। वह परमात्मा ही हैः

अनहद शब्द अपार दूर सों दूर है ।
चेतन निर्मल शुद्ध देह भरपूर है ।।
ताहि निरक्षर जान और निष्कर्म है ।
परमातम तेहि मानि वही परब्रह्म है ।।

सच्चे योगी को परिभाषित करते हुए संत पलटू साहिब ने शब्द-साधना का सारगर्भित वर्णन इस प्रकार प्रस्तुत किया हैः

भीतर औटै तत्व को उठै सबद की खानि ।।
उठै सबद की खानि रहै अंतर लौ लागी ।
सुरति देइ उदगारि जोगिनी आपुइ जागी ।।

अर्थात् यदि साधक अपने अंतर में शब्द का अभ्यास करके साधना पूर्ण कर लेता है तो वह शब्द की खान ही बन जाता है । फिर उसका ध्यान अंतर में लग जाता है तथा उसके अंदर प्रेम, धैर्य आदि अनेक गुण प्रकट हो जाते हैं। ऐसे साधक को ही सच्चा योगी कहते हैं।

संत शिवदयाल सिंह (स्वामीजी महाराज) ने संभवतः शब्द का सबसे विस्तृत विवरण अपने ग्रंथ 'सार बचन' में किया हैः

शब्द ने रची त्रिलोकी सारी ।
शब्द से माया फैली भारी ।।
शब्द ने अंड ब्रह्मंड रचा री।
शब्द से सात दीप नौखंड बना री ।।

शब्द ने न केवल त्रिलोकी की रचना की है, अपितु माया का प्रसार भी शब्द के माध्यम से ही हुआ है। संपूर्ण सृष्टि शब्द के द्वारा ही अस्तित्व में आई है।

शब्द साधना का यह मार्ग प्राचीन काल से चला आ रहा है तथा आधुनिक काल के अनेक संत भी इस साधना पर अपने पूर्ववर्ती संतों के ही समान बल देते हैं। संतों के सम्पूर्ण साहित्य को यदि इस साधना के दृष्टिकोण से देखा जाये तो उनकी बानियों के अनेक अनसुलझे पहलू स्वयंमेव ही स्पष्ट हो जाते हैं।

चीन के दार्शनिक लाओ-जू का कथन है कि ताओ (शब्द) समय और अंतरिक्ष से भी पहले से विद्यमान था तथा उसे यह ज्ञान अपने अन्तर से प्राप्त हुआ। यह ब्रह्माण्ड को उत्पन्न करनेवाली शक्ति है, जो कि हर जगह प्रवाहित हो रही है। बाइबिल में भी वर्णन आता हैः

"सृष्टि के आदि में शब्द था। शब्द परमात्मा के साथ था और शब्द ही परमात्मा था।"

इसी प्रकार यूरोप तथा फारस में हुए विभिन्न महात्माओं ने भी शब्द की साधना का वर्णन किया है। माना जाता है कि मध्यकालीन सूफी कवियों यथा जलाल अल-दीन मोहम्मद रूमी और सिंधी कवियों और संतमत से संबंधित कवियों के बीच बहुत समानता है।

टी.आर शंगारी तथा अन्य विद्वानों के अनुसार भी यह शब्द "किसी भाषा का कोई शब्द न होकर, परमात्मा या उसकी सृष्टि की रचना और संभाल करनेवाली शक्ति है। इस शक्ति के सहारे ही सृष्टि कायम है और यही रचना की कैद में जकड़े जीव को इससे मुक्त करके रचनाकार से मिलाने का साधन है।"

निष्कर्ष

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि आज जबकि धर्म के आधार पर मानव जाति को बाँटने के सर्वाधिक प्रयास हो रहे हैं, शब्द मार्ग वह सूत्र सिद्ध हो सकता है जो भारत ही नहीं, संपूर्ण विश्व के धर्मों को आपस में जोड़ता है। केवल यही एकमात्र ऐसा सर्वमान्य सिद्धांत है जो सभी धर्मों में परस्पर सौहार्द्र विकसित करने का आधार बन सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ

1 श्यामसुंदर दास, 'कबीरः एक पुनर्मूल्यांकन' में 'कबीर के व्यावहारिक सिद्धांत', बलदेव वंशी (संपा.), आधार प्रकाशन, पंचकूला, प्रथम पेपरबैक संस्करण, 2006, पृ. 262

2 डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी, 'कबीरः एक पुनर्मूल्यांकन' में 'कबीर और विपक्षी मुद्दे', बलदेव वंशी (संपा.), आधार प्रकाशन, पंचकूला, प्रथम पेपरबैक संस्करण, 2006, पृ. 272

3 कबीर साखी संग्रह, बेलवीडियर प्रिंटिंग वर्क्स, इलाहाबाद, ग्यारहवां संस्करण, 2001, पृ. 95

4 शब्दकोश संतमत बानी, राधास्वामी ट्रस्ट, स्वामी बाग, आगरा, तृतीय संस्करण, 2000, पृ. 242

5 जॉन डेविडसन, ए ट्रेजरी ऑफ मिस्टिक टर्म्स, भाग 1, खंड 3, साइंस ऑफ द सोल रिसर्च सेंटर, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2003, पृ. 291

6 डॉ. पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल, हिन्दी काव्य में निर्गुण संप्रदाय, अवध पब्लिशिंग हाउस, लखनऊ, 1968, पृ. 383

7 उर्वशी सूरती, कबीरः जीवन और दर्शन, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, दूसरा पेपरबैक संस्करण, 2011, पृ. 110

8 जॉन डेविडसन, ए ट्रेजरी ऑफ मिस्टिक टर्म्स, भाग 1, खंड 3, पृ. 27

9 परशुराम चतुर्वेदी, उत्तरी भारत की संत परम्परा, साहित्य भवन प्रा. लिमिटेड, इलाहाबाद, 2010, पृ.150

10 डॉ. पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल, हिन्दी काव्य में निर्गुण संप्रदाय, पृ. 278

11 डॉ. रेण्डोल्फ स्टोन, द मिस्टिक बाइबिल, राधास्वामी सत्संग ब्यास, छठा संस्करण, 1984, पृ. 57

12 डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी 'कबीरः एक पुनर्मूल्यांकन' में 'कबीर और विपक्षी मुद्दे', बलदेव वंशी (संपा.) पृ. 272

13 डॉ.रामकुमार वर्मा, कबीर का रहस्यवाद, साहित्य भवन (प्रा.) लिमिटेड, इलाहाबाद, ग्यारहवां संस्करण, 1972, पृ. 231

14 उर्वशी सूरती, कबीरः जीवन और दर्शन, पृ. 111

15 शब्दकोश संतमत बानी, पृ. 242

16 गुपुत रूप परगट सब ठाईं,

17 निरगुन एकंकार गुसाईं।

18 मंझन, मधुमालती, माताप्रसाद गुप्त (संपा.), मित्र प्रकाशन प्रा. लिमिटेड, इलाहाबाद, राज संस्करण, 1961, पृ. 3

आए एकंकार सब, सांई दीए पठाइ।
दादू न्यारा नांव धरि , भिंनि भिंनि हवै जाइ।।
आये एकंकार सब, सांई दीए पठाइ।
आदि अंति सब एक है, दादू सहजि समाइ।।

19 दादू दयाल ग्रंथावली, परशुराम (संपा.), नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, प्रथम संस्करण, सं. 2023 वि., पृ. 273

20 गोरखबानी, संपा. व टीका: डॉ. पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल, हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग, दूसरा संस्करण, सं. 2003 वि., सबदी 4, पृ. 2

21 कबीर साखी संग्रह, पृ. 110

22 कबीर साखी संग्रह, पृ. 108

23 कबीर साखी संग्रह, पृ. 93

24 दादूदयाल ग्रंथावली, पृ. 227

25 द हिन्दी पदावली आफ नामदेव, विनान्द कैलवर्त एवं मुकुन्द लाठ (संपा.), मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1989, पृ. 292

26 कबीर साखी संग्रह, पृ. 92

27 श्री आदि ग्रन्थ, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, अमृतसर, पृ. 1291

28 दादू दयाल ग्रंथावली, पृ. 376

29 आचार्य श्री पृथ्वी सिंह आजाद, रविदास दर्शन, श्री गुरु रविदास संस्थान, चंडीगढ़, 1973, साखी 77

30 भक्तिसागरादि 17 ग्रंथ, खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन, मुम्बई, 2006, पृ. 129

31 पलटू साहिब की बानी, भाग 1, बेलवीडियर प्रिंटिंग वक्र्स, इलाहाबाद, ग्यारहवाँ संस्करण, 1980, कुण्डली 224

32 सार बचन राधास्वामी, भाग-1, राधास्वामी ट्रस्ट, स्वामी बाग, आगरा, उन्नीसवां संस्करण, 2001, 92

33 लाओ-जू , ताओ ते किंग, एस.मिशेल (अनु.), पद्य 21, 25, 34

34 होली बाइबिल, किंग जेम्स वर्जन, जोन्डरवान, ग्रांडरेपिड्स, मिशिगन 49530, संयुक्त राज्य अमेरिका, 2002, जान, 11, पृ. 658

35 अली अलसानी, 'लिटरेरी कल्चर इन हिस्ट्री' में 'सिंधी लिटरेरी कल्चर', शेल्डन पोल्लोक (संपा.), यूनीवर्सिटी ऑफ कैलीफोर्निया प्रेस, प्रथम संस्करण, 2003, पृ. 637

36 टी.आर. शंगारी तथा अन्य, नाम सिद्धान्त, राधास्वामी सत्संग ब्यास, छठा संस्करण, 2009, पृ. 114